*अध्ययन सामग्री
विषय- हिन्दी
स्नातक प्रतिष्ठा(खण्ड-3)
प्रश्न पत्र- षष्ठ
वक्रोक्ति अलंकार का लक्षण एवं उदाहरण
पदनाम- डॉ स्मिता जैन
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
एच डी जैन कॉलेज, आरा*

21:54 ✓✓

Scanned with CamScanner

(3) वक्रोक्ति

यदि वक्ता के अन्यार्थक वाक्य का, श्लेष या काकु से, श्रोता अन्य अर्थ करे तो वक्रोक्ति अलंकार होता है।

वक्रोक्ति का अर्थ है - वक्र-उक्ति अर्थात वक्ता ने जिस अभिप्राय से जो वाक्य कहा हो, उसका श्रोता द्वारा भिन्न अर्थ कल्पना करके उत्तर दिया जाना। भिन्न अर्थ की कल्पना दो प्रकार से हो सकती है — श्लेष द्वारा और काकु द्वारा।

Scanned with CamScanner

अतः वक्रोक्ति के दो भेद हैं —

(1) श्लेष - वक्रोक्ति
(2) काकु - वक्रोक्ति

श्लेष वक्रोक्ति —

जो वक्रोक्ति श्लेष के द्वारा होती है उसे श्लेषमूला वक्रोक्ति कहते हैं।

जिस शब्द या पद के एक से अधिक अर्थ होते हैं उसको श्लिष्ट शब्द या श्लिष्ट पद कहते हैं। श्लिष्ट शब्द या पद का कहीं भङ्ग होकर और कहीं पूरे शब्द या पद का भिन्नार्थ किया जाता है।

सभंगश्लेषमूला वक्रोक्ति —

" अयि गौरवशालिनि! मानिनि! आज
सुधास्मित क्यों बरसाती नहीं?
निज कामिनि को प्रिय! गौ, अवशा
अलिनी न कभी कहि जाती कहीं।
यह कौशलता भवदीय प्रिय
पर - दर्भ - लता न दिखाती यहीं,
मुददायक हों गिरिजा प्रिय से
यों विनोद में मोद बढ़ाती वहीं।"

श्री शंकर पार्वती के इस क्रीड़ालाप में 'गौरवशालिनि' सम्बोधन पद को पार्वती ने गौ, अवशा, अलिनि इस प्रकार भङ्ग करके श्लेष द्वारा अन्यार्थ कल्पना किया है अतः यह सभंगश्लेष

- सूला - वक्रोक्ति है।

गौं - गाय, अवशा - स्वतन्त्र, अलिनी - भौंरे की मादा, कौशलता - चातुर्य, दर्भलता - डाभ की लता।

अभंग श्लेष - सूला वक्रोक्ति

"एक कबूतर देख हाथ में पूछा कहां अपर है?
उसने कहा अपर कैसा? वह उड़ गया सपर है।"

यहां पूर्वार्द्ध में जहाँगीर ने दूसरे कबूतर के बारे में पूछने के लिए अपर (अन्य) शब्द का प्रयोग किया है। पर नूरजहां ने अपर का बिना पर (पंख) वाला अर्थ कर उत्तरार्द्ध में उत्तर दिया है। अपर में अभंगश्लेष है और यहां तन्मूलक वक्रोक्ति है।

"अंबरगत विलसत सघन, स्याम पयोधर दोय।
देहु दिखाई न राखिये, बलि कंचुक बिच गोय"

नायक से नायिका कह रही है कि - हे श्याम! अंबरगत (आकाश में) दो घन पयोधर (बादल) शोभ रहे हैं। यहाँ अंबर और पयोधर का श्लेष से दूसरा अर्थ (वस्त्र में, कपड़े के नीचे दो कठोर स्तन शोभ रहे हैं) समझकर नायक कहता है कि हे सुन्दरि! इन पयोधरों (स्तनों) को अंबर (वस्त्र) में न छिपा रखो, दिखा दो।

नायिका ने 'अंबर' और पयोधर

का प्रयोग कुक्षा आकांक्षा और कैथ्थ के पना लिए किया है और नायक ने श्लेषद्वारा अंबर का वस्त्र और पयोधर का स्तन कर उत्तर दिया है। अतः यहाँ भी वक्रोक्ति है। अंबर और पयोधर का खण्ड किए बिना अर्थ बदल गया है, इसलिए उसे अभंगश्लेषमूला वक्रोक्ति कहेंगे।

५ काकु वक्रोक्ति

जहाँ 'काकु' उक्ति में अन्य द्वारा अन्यार्थ कल्पना की जाती है, वहाँ काकु - वक्रोक्ति होती है। 'काकु' एक विशेष प्रकार की कंठध्वनि होती है —

" मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू,
तुम्हहिं उचित तप मो कहँ भोगू।"

'तुम्हें तप उचित और मुझे भोग' यह विधिवाचक काकु के द्वारा निषेध का अर्थ प्रदान करता है, अर्थात तुम्हें और मुझे भोग उचित नहीं है।